वाल्यूम 01 » पत्रिका अंक 03

बच्चों के लिए एक काथलिक पत्रिका

KAIROS बड्स

भारत, संयुक्त राज्य, मध्य पूर्व और हिन्दी संस्करण

इस अंक में

संत अन्द्रेयस का बैसिलिका, मंतुआ, इटली

यूखरिस्त की व्याख्या: मिस्सा के तत्व

प्रतीक्षा सार्थक है।

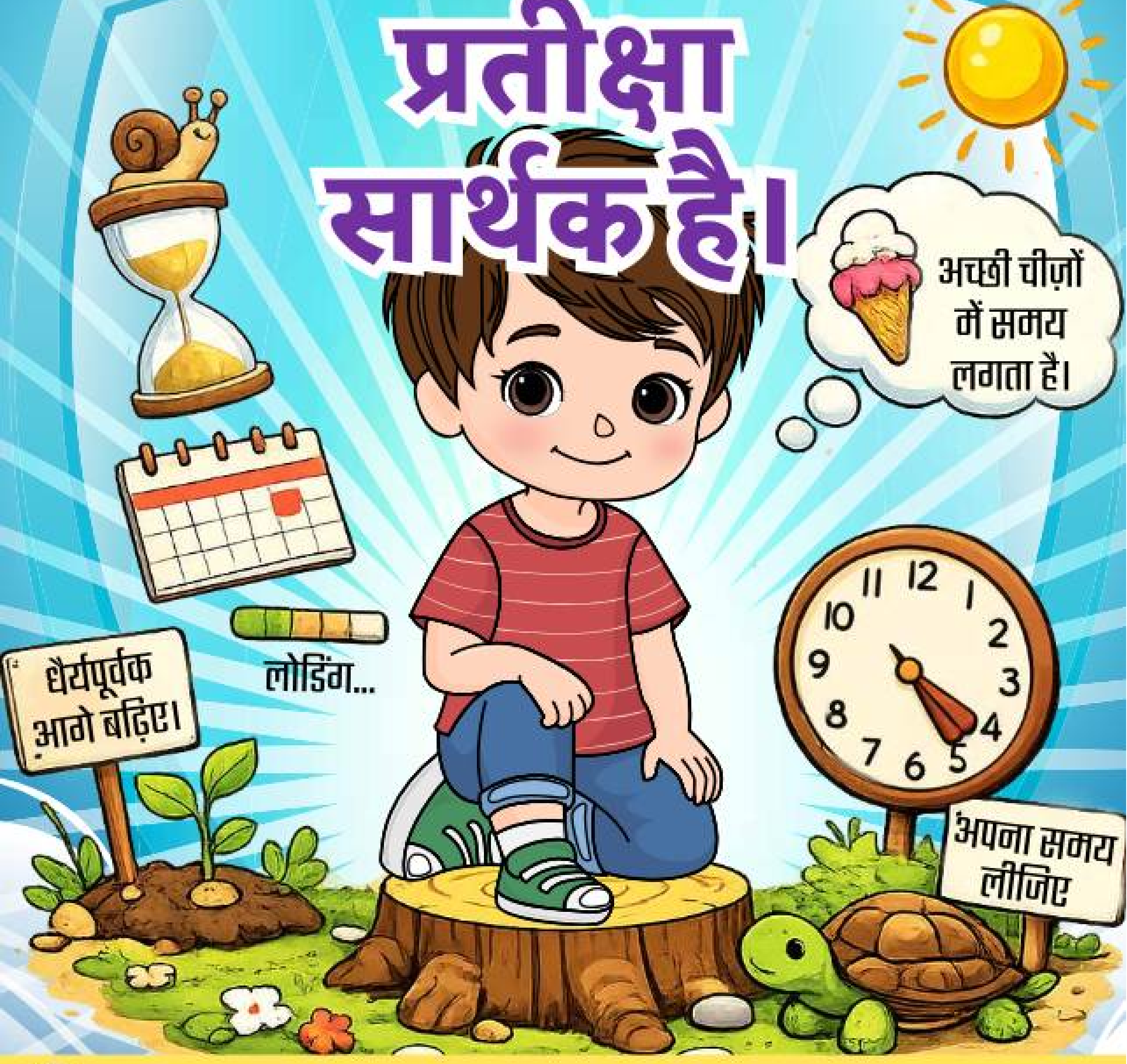

इस अंक में बड्स

कार्टून

08 यूदस का आत्महत्या करना

12 संत फ्रांसिस जेवियर काब्रिनी

26 मसीह के सितारों की तरह

खोया हुआ खजाना 32

एक्टिविटी

17 बाइबिल सुलेख

18 रंग भरिये

20 जीवन का वचन

21 3D बाइबिल पुस्तक

31 पहेली

34 खोजो और रंग भरो

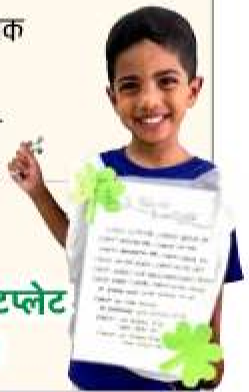

24 संत पैट्रिक का ब्रेस्टप्लेट और शैम्रॉक क्राफ्ट

कूल काथलिक

तीर्थ यात्रा 04

26 पूर्ण बनना, परिपूर्ण नहीं!

30 किड कैथोपीडिया

काथलिक विश्वकोश बच्चों के लिए

बाबेल

10 यूखरिस्त की व्याख्या

पवित्र मिस्सा के अंग

35 होली ह्यूमर

14 गेहूँ और जंगली बीज का दृष्टांत

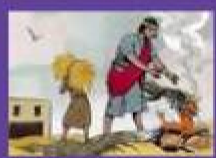

स्मार्ट किड्स

06 तीसरे दिन ईश्वर ने मेरी प्रार्थना का जवाब दिया

16 मेरी कहानी

23 मेरा कैनवास

KAIROS

बड्स

PATRON
Major Archbishop Mar Raphael Thattil
(Ecclesiastical Advisor, Jesus Youth International)

SPIRITUAL DIRECTOR
Fr Joseph Edhumayil
(Jesus Youth International Chaplain)

PRINTER AND PUBLISHER
Dr Edward Edezhath

EXECUTIVE DIRECTOR
Dr Midhun Paul
(Jesus Youth International Coordinator)

DIRECTOR, KAIROS MEDIA
Dr Chackochan J Njavallil

EDITOR-IN-CHIEF
Nobin Jose

MANAGING EDITOR
Joshy Joseph, Houston, USA

EXECUTIVE EDITOR
Tania Rose Josun | (editor.buds@jykairosmedia.org)

ISSUE EDITORS
Suby Emmanuel, India | Serena DSouza, USA | Sona Michael, USA

CIRCULATION COORDINATOR
Anto Puthur, Cochin, India +91 96055 11644

ASSOCIATE CIRCULATION COORDINATORS

AUSTRALIA Mintu Vijoy, Melbourne +61 452 538 785
BAHRAIN: Neenu Maria Jibin +973 33715472
BANGLADESH Tias Victor Palma +880 1717-152023
CAMBODIA Sophearong Ravy, Phnom Penh +855 96 426 5472
CANADA Abhilesh Thomas +1 289 952 1785
EAST TIMOR Noevia Maia Amaral +670 7625 5967
GERMANY Anna Paul, Berlin +49 176 83495451
INDIA Austin Michael, Mangalore +91 8277405251
IRELAND Suresh V Joy +353 87 963 0904
ISRAEL Darees Augustine +972 52 441 5530
ITALY Anoop P Varghese +39 3884256258
KUWAIT Rajeev J Chacko, Ahmadi +965 66388310
MALAYSIA Sweety Kamala Prasad +60 162568139
NETHERLANDS Jojo Varghese, Utrecht +31 684974552
NEW ZEALAND Derick Daniel, Auckland +64 29 127 0650
OMAN Sanal +968 92120376
PAKISTAN Asif Emmanuel +92 3022534254
QATAR Sijo C Johny +974 3357 2544
SINGAPORE Savio Francies +65 9021 9798
SRILANKA Sonal Fernando +94 77 3818399
SWITZERLAND Anu Jose +41 799177100
THAILAND Vineeth Andrew +66 86 372 6601
UAE Nelson Varghese +971 50 815 0050
UGANDA Mbowa Ronald +256 706844152
UK Mathachen Maduckalouzhy +44 7969 365686
USA Denny Joseph +1 (832) 640-3106

FINANCE COORDINATOR
Leena Shaju, Cochin, India | +91 62382 79115 | finance@jykairosmedia.org

DESIGN
Manna Media Hub, Delhi, India | info@mannamediahub.com

MAILING ADDRESS

Kairos Media USA
3010 Mason Grove Ln
Pearland, TX,
USA. 77584
+1 832 592 3675

Kairos Media India
No 8/174, Navodaya
Studio Complex,
Thengod P.O,
Cochin, Kerala,
India. Pin: 682030
+91 9895711718

Kairos Media UK
St Charles Street,
Sheffield S9 3WU,
United Kingdom
+44 7969365686

To subscribe to this magazine scan QR code or visit www.jykairosmedia.org

DISCLAIMER: Kairos Media is the mass media initiative of Jesus Youth, an international Catholic movement approved by the Holy See. Kairos Media considers its sources reliable and verifies as much data as possible. However, reporting inaccuracies can occur. Consequently, readers using this information do so at their own risk. While every effort has been made to ensure that information is correct at the time of print, Kairos Media cannot be held responsible for the outcome of any action or decision based on the information contained in this publication/website. The publishers or authors do not give any warranty for the completeness or accuracy of this publications' content, explanation, or opinion. Although persons and ministries mentioned herein are believed to be reputable, neither Kairos Media nor any of its employees, sales agents, or contributors accept any responsibility whatsoever for such persons and ministries activities. No part of this publications and/ or website may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form without prior written permission from Kairos Media. Permission is only deemed valid if approval is in writing.

Kairos Media

संपादकीय

आइए स्वर्ग के अंक कमाएँ

नमस्ते दोस्तों! 😄

घर में कई परिवार अंक प्रणाली (पॉइंट सिस्टम) का उपयोग करते हैं। जब बच्चे अच्छे काम करते हैं, तो उन्हें अंक मिलते हैं और वे उन अंकों से इनाम लेते हैं 🍭🎁। यह मजेदार होता है!

लेकिन एक सवाल है–

क्या हम अच्छे काम सिर्फ इनाम के लिए करते हैं, या इसलिए कि येसु हमसे यही चाहते हैं ?

मैं आपको **अजना जॉर्ज** के बारे में बताता हूँ–वह एक युवा जीसस यूथ बहन थीं। वह येसु से बहुत प्रेम करती थीं ❤️। वह हर दिन पवित्र मिस्सा में येसु को ग्रहण करना और उन्हें दूसरों के साथ बाँटना चाहती थीं। उन्होंने जीसस यूथ की विभिन्न सेवाओं में सेवा की और वह एक बेहतरीन गायिका भी थीं 🎶।

अजना कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से पीड़ित हो गई, फिर भी उन्होंने कभी येसु पर अपना भरोसा नहीं छोड़ा। येसु के प्रति उनका प्रेम और भी गहरा होता गया। 21 जनवरी 2022 को, केवल **27 वर्ष** की आयु में, वह स्वर्ग चली गईं। अजना सचमुच 'यूखरिस्त की बुलबुल' थीं–जिनकी आवाज और जीवन, पवित्र यूखरिस्त में येसु के प्रति उनके प्रज्वलित प्रेम का गीत गाते थे। आज भी अजना बहुतों को प्रेरित करती हैं कि वे प्रार्थना करें, पवित्र मिस्सा में भाग लें और पवित्र जीवन जिएँ।

प्रिय दोस्तों, आइए हम संतों की तरह जीने का प्रयास करें–घर के अंकों के लिए नहीं, बल्कि **स्वर्ग के अंकों** के लिए!

आइए शुरुआत करें–घर में प्रेम करें, मदद करें, प्रार्थना करें और दयालु बनें और फिर उसी प्रेम को जहाँ भी जाएँ, साथ लेकर चलें।

✨ अजना की तरह येसु के लिए चमकिए!

नोबिन जोस

मुख्य संपादक

nobin.jose@jykairosmedia.org

संत अन्द्रेयस की बेसिलिका

मैन्टुआ, इटली

- सोना माइकल

इटली में स्थित एक सुंदर गिरजाघर की कल्पना कीजिए, जहाँ येसु के अपने रक्त की बूंदें सुरक्षित रखी गई हैं-एक पवित्र धरोहर, जो उस समय की है जब उन्होंने हमें बचाने के लिए क्रूस पर अपने प्राण दिए। यह वही स्थान है-मैन्टुआ की सेंट एंड्रिया की बेसिलिका। यह अद्भुत स्थान हमें ईश्वर के महान प्रेम की याद दिलाता है और येसु के और निकट आने में हमारी सहायता करता है।

मसीही परंपरा के अनुसार, जब येसु को क्रूस पर चढ़ाया जा रहा था, तब एक रोमी सैनिक जिसका नाम लॉन्गिनस था, उसने भाले से येसु की पसली को बेधा। येसु की मृत्यु के बाद, लॉन्गिनस ने अपने पाप पर पश्चाताप किया और क्रूस के नीचे से रक्त से सनी हुई मिट्टी को इकट्ठा किया।

यह पवित्र रेलिक –प्रेजियोसिस्सिमो सांग्वे दी क्रिस्तो (मसीह का परम मूल्यवान रक्त) –संत लॉन्गिनस द्वारा सुसमाचार के साथ मैन्टुआ लाया गया।

बाद की शताब्दियों में यह रेलिक खो गया, लेकिन अंततः संत एंड्रिया ने मैन्टुआ के दो लोगों को इस रेलिक का स्थान प्रकट किया। इसी कारण इस गिरजाघर का नाम संत अन्द्रेयस (Sant' Andrea) रखा गया। सन् 1053 में पॉप लियो IX ने इस रेलिक को प्रामाणिक माना।

यह बेसिलिका इन पवित्र अवशेषों को सुरक्षित रखने के लिए बनाई गई थी।

इन रेलिक्स को पवित्र पात्रों (Sacri Vasi) में रखा गया है और वे भूमिगत एक सुंदर क्रिप्ट में सुरक्षित हैं।

स्वर्गारोहण पर्व के दिन, इन रेलिक्स को क्रिप्ट से गुंबद के ठीक नीचे बने एक छिद्र के माध्यम से ऊपर लाया जाता है। गुड फ्राइडे के दिन भी इन्हें प्रदर्शित किया जाता है और नगर की सड़कों से होकर जुलूस में ले जाया जाता है।

यह गिरजाघर संत अन्द्रेयस के नाम पर है, जो येसु के पहले प्रेरित और संत पेत्रुस के भाई थे।

संत अंद्रेयस एक मछुआरे थे, जिन्होंने तुरंत अपने जाल छोड़कर येसु का अनुसरण किया।

उन्होंने अपने भाई पेत्रुस को भी येसु से मिलने लाया।

संत अन्द्रेयस हमें सिखाते हैं कि हमें भी ईश्वर को तुरंत "हाँ" कहना चाहिए–

और लोगों के हृदयों को येसु के लिए जीतने वाले, अच्छे "मनुष्यों के मछुए" बनना चाहिए।

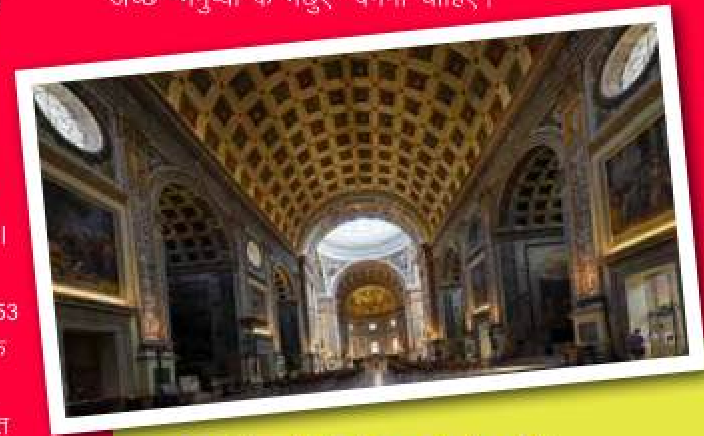

नन्हे तीर्थयात्रियों के लिए एक प्रार्थना

प्रिय येसु, संत अन्द्रेयस में आपके अनमोल रक्त के लिए आपका धन्यवाद। हमें संत अन्द्रेयस और संत लोंगिनुस की तरह आपसे प्रेम करना सिखाइए। हमारे हृदयों को शुद्ध कर दीजिए और हमें अपने लिए मित्रों का मछुआरा बना दीजिए।

आमेन

नन्हे लेखक

“तीसरे दिन ईश्वर ने मेरी प्रार्थना का जवाब दिया”

- जेरेमी प्रिंस पुथेनवलपिल » 10 वर्ष

मैं जेरेमी हूँ। मैं मध्य प्रदेश, उत्तर भारत का एक होमस्कूल छात्र हूँ! मैं आप सबके साथ कुछ ऐसा साझा करना चाहता हूँ, जो कुछ महीने पहले हमारे साथ हुआ। हम हर सुबह 5:45 बजे इन्फेंट जीसस श्राइन में पवित्र मिस्सा के लिए जाते हैं। अक्सर उस समय हम एक खास सड़क पर कई दुर्घटनाएँ होते हुए देखते हैं। आख़िरी बार जब मैंने ऐसा देखा, तो मैं सोचने लगा कि उस सड़क पर इतनी ज़्यादा दुर्घटनाएँ क्यों हो रही हैं। तब मैंने ईश्वर से प्रार्थना करने का निर्णय लिया कि वहाँ दुर्घटनाएँ रुक जाएँ।

मैंने लगातार दो दिन तक प्रार्थना की।

तीसरे दिन, जब मेरे पापा उस सड़क से गुजरे, तो उन्होंने देखा कि पुलिस वहाँ स्पीड कंट्रोल बैरिकेड्स लगा रही है और ट्रैफिक की जाँच कर रही है।

क्या आप जानते हैं कि मैंने कैसे प्रार्थना की?

मैंने उस जगह का एक नक्शा कागज पर बनाया, और पवित्र संस्कार (Blessed Sacrament) के सामने बैठकर प्रार्थना की। अगले दिन, क्योंकि मैं एक आल्टर बॉय था, मैं वह नक्शा अपने साथ मिस्सा बलिदान के लिए भी ले गया।

तीसरे दिन, मेरी प्रार्थना का उत्तर मिला, जब पुलिस वहाँ आई और बैरिकेड्स लगा दिए।

सारी महिमा ईश्वर को !

पिलातुस के सामने येसु

(मत्ती 27:11-26)

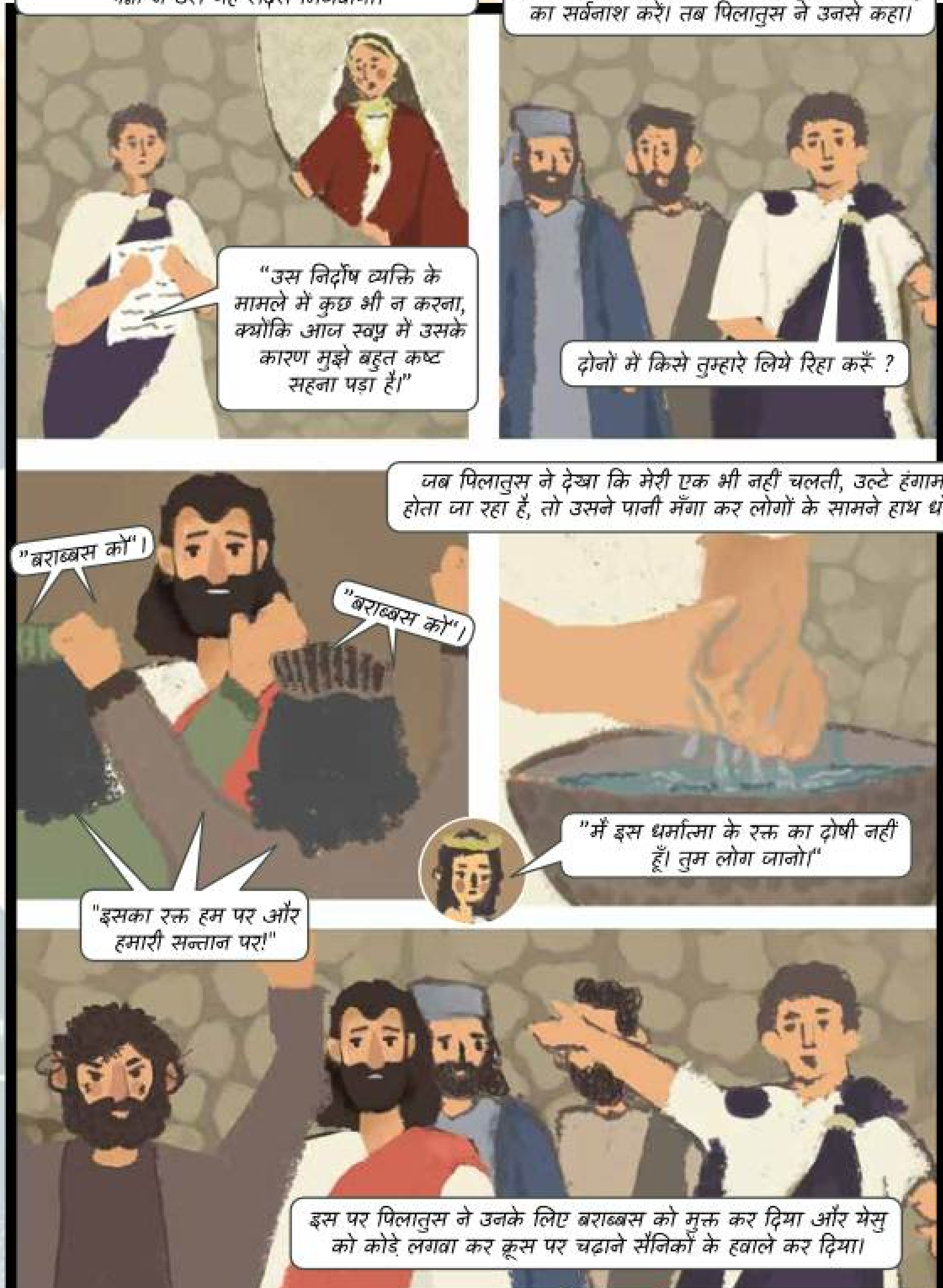

- सिस्टर सुना थॉमस CSM

- चित्रांकन: सूसन्ना जैक्सन

यूखरिस्त की व्याख्या

पवित्र मिस्सा के अंग

- फा. जस्टिन जोसेफ पनाचिक्कल एम एस एफ एस

नमस्ते दोस्तों,
आइए हम पवित्र मिस्सा के बारे में सीखना जारी रखें। इस बार हम पवित्र मिस्सा के विभिन्न अंगों और उनके अर्थ पर ध्यान देंगे। हम पहले ही देख चुके हैं कि पवित्र मिस्सा दो मुख्य भागों से मिलकर बना है—वचन की धर्मविधि (Liturgy of the Word) और यूखरिस्त की धर्मविधि (Liturgy of the Eucharist)। सामान्य रूप से, मिस्सा को इन भागों में बाँटा जा सकता है: प्रारंभिक विधियाँ (Introductory Rites) वचन की धर्मविधि, यूखरिस्त की धर्मविधि और समापन विधियाँ (Concluding Rites)।

प्रारंभिक विधियों का दोहरा उद्देश्य होता है:

पहला, विश्वासियों को एक समुदाय के रूप में एकत्र करना
दूसरा, उन्हें ईश्वर के वचन को सुनने और यूखरिस्त को ठीक प्रकार से मनाने के लिए तैयार करना।

कैथोलिक कलीसिया में प्रवेश करते समय हम सबसे पहले क्या करते हैं?

हम पवित्र जल में अपनी उँगलियाँ डुबोते हैं और क्रूस का चिन्ह बनाते हैं। यह हमें हमारे बपतिस्मा की याद दिलाता है—वह संस्कार जिसके द्वारा हमने ईश्वर के परिवार, अर्थात कलीसिया, में प्रवेश किया। पवित्र जल से अपने आप को आशीषित करके हम मसीह के प्रति निष्ठा में पवित्र जीवन जीने की अपनी प्रतिज्ञा को नवीनीकृत करते हैं और पवित्र मिस्सा में फलदायी रूप से भाग लेने के लिए स्वयं को तैयार करते हैं।

कलीसिया में प्रवेश करने के बाद, जब वेदी के पास यूखरिस्त उपस्थित होता है, तो हम सबसे पहले घुटना टेकते (Genuflect) हैं। इसका अर्थ है

कि हम येसु का सम्मान करने के लिए अपना दायाँ घुटना भूमि से स्पर्श कराते हैं, क्योंकि वे वास्तव में पवित्र संदूक में उपस्थित हैं। पूर्वी विधि (Eastern Rite) में यह प्रायः एक गहरा झुकाव होता है कि सिर्फ़ सिर झुकाना नहीं, बल्कि पूरे शरीर को झुकाना (अगली बार ध्यान रखिए!)।

घुटना टेकना एक प्रकार का सम्मान है, जो विशेष रूप से धन्य संस्कार की आराधना को व्यक्त करता है। प्रार्थना की भावना में गहराई से झुककर या घुटना टेककर, हम यह प्रकट करते हैं कि हम रोटी और दाखमधु के रूप में मसीह की वास्तविक उपस्थिति में विश्वास करते हैं (काथलिक कलीसिया का धर्मशिक्षा ग्रंथ, CCC 1378)।

इसलिए, पवित्र मिस्सा के बाहर भी, जब हम कलीसिया में प्रवेश करते हैं या बाहर निकलते हैं, और धन्य संस्कार के सामने से गुजरते हैं, तो हमें अवश्य घुटना टेकना या गहराई से झुकना चाहिए। यह मूलतः येसु को नमस्कार करने और उनका आदर करने का तरीका है।

प्रवेश भजन या प्रतिगीत

(Entrance Antiphon or Hymn)

इस समय पुरोहित और वेदी सेवकों की जुलूस होती है और हम प्रवेश गीत गाते हैं। भव्य वस्त्रों में सजे पुरोहित मसीह राजा का प्रतिनिधित्व करते हैं (प्रकाशित वाक्य 1:12–13)। संगीत शुरू होते ही हम खड़े होते हैं—यह मसीह का स्वागत और अभिवादन करने का संकेत है।

गायन ईश्वर की स्तुति का एक अत्यंत उपयुक्त तरीका है, क्योंकि इसमें बोलने की तुलना में हमारा शरीर और आत्मा दोनों अधिक सम्मिलित होते हैं। जब हम गाते हैं, तो हम अपने पूरे अस्तित्व से ईश्वर की स्तुति करते हैं।

जो विश्वासी प्रभु के आगमन की प्रतीक्षा में एकत्र होते हैं, उन्हें प्रेरित संत पौलुस भजन, स्तुतिगान और आध्यात्मिक गीत गाने के लिए प्रेरित करते हैं (कलोसियों 3:16)। गायन हृदय के आनंद का चिन्ह है (प्रेरित चरित 2:46)। याद रखिए– "जो अच्छा गाता है, वह दो बार प्रार्थना करता है।"

प्रवेश भजन या एंटीफन हमें यह समझने में मदद करता है कि हम क्या करने जा रहे हैं; यह हमें हमारे दैनिक जीवन की चिंताओं से हटाकर, ईश्वर की स्तुति करने और मिस्सा में भाग लेने के लिए हमारे हृदय को तैयार करता है।

और यदि आपको लगता है कि आप गाना नहीं जानते...?
अगर आपकी आवाज अच्छी नहीं है? तो "डरिए मत!" ईश्वर ने आपको जो आवाज दी है, वही उसकी देन है। चाहे आपको वह कैसी भी लगे, उसी से ईश्वर की स्तुति कीजिए और उसे उन्हें अर्पित कीजिए। इसलिए संकोच मत कीजिए- आइए, हम सब मिलकर ऊँचे स्वर में गाएँ!

मुझे लगता है, आज के लिए इतना काफी है। आगे और भी बहुत कुछ सीखना है! जुड़े रहिए।

संत फ्रांसिस जेवियर कैब्रिनी

भाग 2

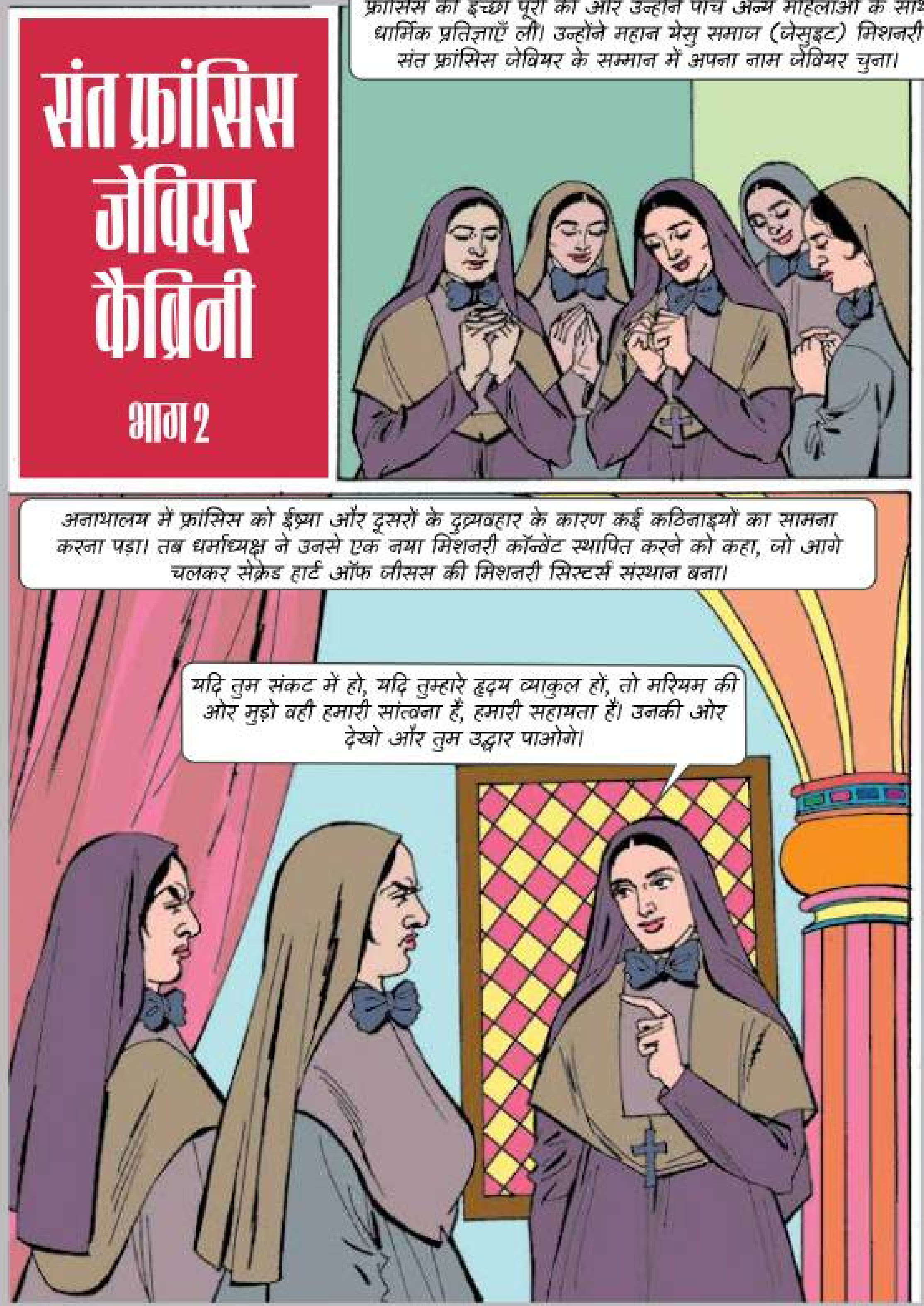

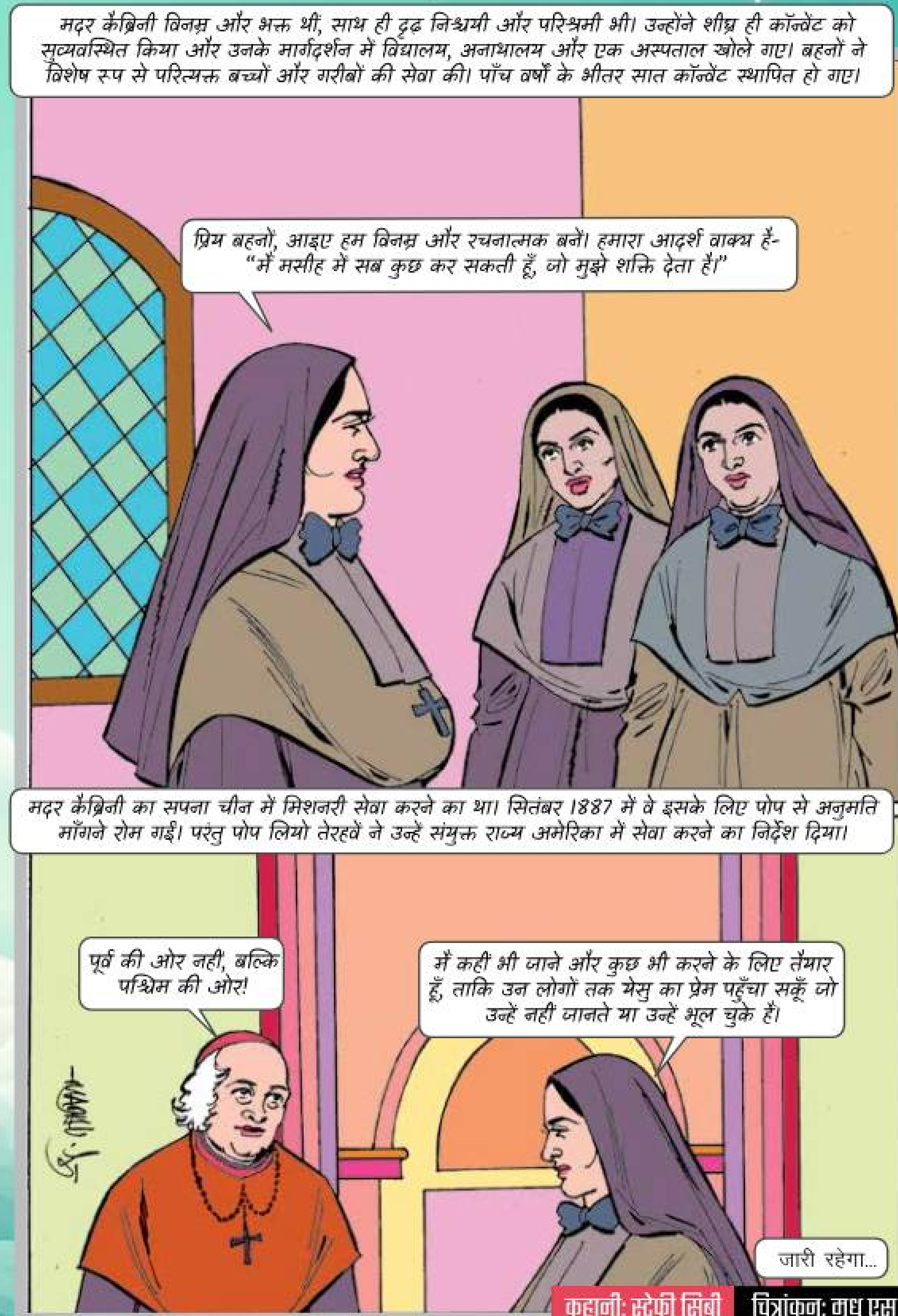

कहानी: स्टेफी सिबी चित्रांकन: मधु एस

येसु ने कहा, "स्वर्ग का राज्य उस मनुष्य के समान है, जिसने अपने खेत में अच्छा बीज बोया। जब सब लोग सो रहे थे, तब उसका शत्रु आया और गेहूँ के बीच जंगली बीज बोकर चला गया।"

(मत्ती 13:24-25)

गेहूँ और जंगली बीज का दृष्टांत

- ब्रेनी पोर्टलिस

अरे नहीं! जंगली बीज ऐसे पौधे होते हैं जो अच्छे पौधों, जैसे गेहूँ, से पोषण छीन लेते हैं।

येसु ने आगे कहा कि फसल और जंगली बीज दोनों साथ-साथ बढ़ते रहे। तब उस मनुष्य के सेवक ने उससे पूछा, "ये जंगली बीज कहाँ से आए? क्या हम इन्हें उखाड़ दें?" परन्तु उस मनुष्य ने उत्तर दिया, "नहीं, ऐसा मत करो, क्योंकि जंगली बीज उखाड़ते समय कहीं गेहूँ को भी नुकसान न पहुँच जाए। कटनी के समय तक दोनों को साथ-साथ बढ़ने दो। फिर हम जंगली बीज को चुनकर जला देंगे और गेहूँ को अपने भंडार में इकट्ठा करेंगे।"

इस दृष्टांत के द्वारा येसु हमें स्वर्ग के राज्य के बारे में क्या बताना चाहते हैं?

पोप बेनेडिक्ट सोलहवें ने इस दृष्टांत को बहुत सुंदर ढंग से समझाया है। पवित्र पिता ने कहा कि अच्छे बीज वाला खेत हमारे आत्मा में ईश्वर की कृपा की अवस्था है, जो हमारे बपतिस्मा के दिन हमें प्राप्त होती है। जब हमारा बपतिस्मा होता है, तब हमारी आत्मा उस सुंदर खेत के समान होती है, जो अच्छे बीज को ग्रहण करने और गेहूँ उगाने के लिए तैयार रहती है। हमें अपने विश्वास की देखभाल करनी चाहिए ताकि कोई बुराई, अर्थात जंगली बीज, जड़ न पकड़ सकें।

Pope Benedict XVI, Angelus (17 July 2011).

लेकिन इस दृष्टांत में जंगली बीज अच्छे बीज के बीच उग आते हैं। तब उस मनुष्य ने क्या किया? क्या उसने जंगली बीज को तुरंत उखाड़ने का आदेश दिया? नहीं, वह धैर्यवान रहा। संत अगस्टीन कहते हैं कि यदि हम बुराई करने वालों– अर्थात जंगली बीज– के प्रति धैर्य रखते हैं, तो वे भी अच्छे गेहूँ में बदल सकते हैं! इसका क्या अर्थ है? इसका अर्थ है कि हमें दूसरों के साथ-साथ स्वयं के प्रति भी धैर्य रखना चाहिए। यदि कभी हमें अपने भीतर या अपने आसपास अच्छे बीज दिखाई न दें, तो हमें धैर्य रखना चाहिए और प्रार्थना करनी चाहिए कि प्रभु हमें अच्छे गेहूँ में बदल दें, ताकि जब कटनी का समय आए, हम उसके 'भंडार', अर्थात स्वर्ग, में प्रवेश कर सकें।

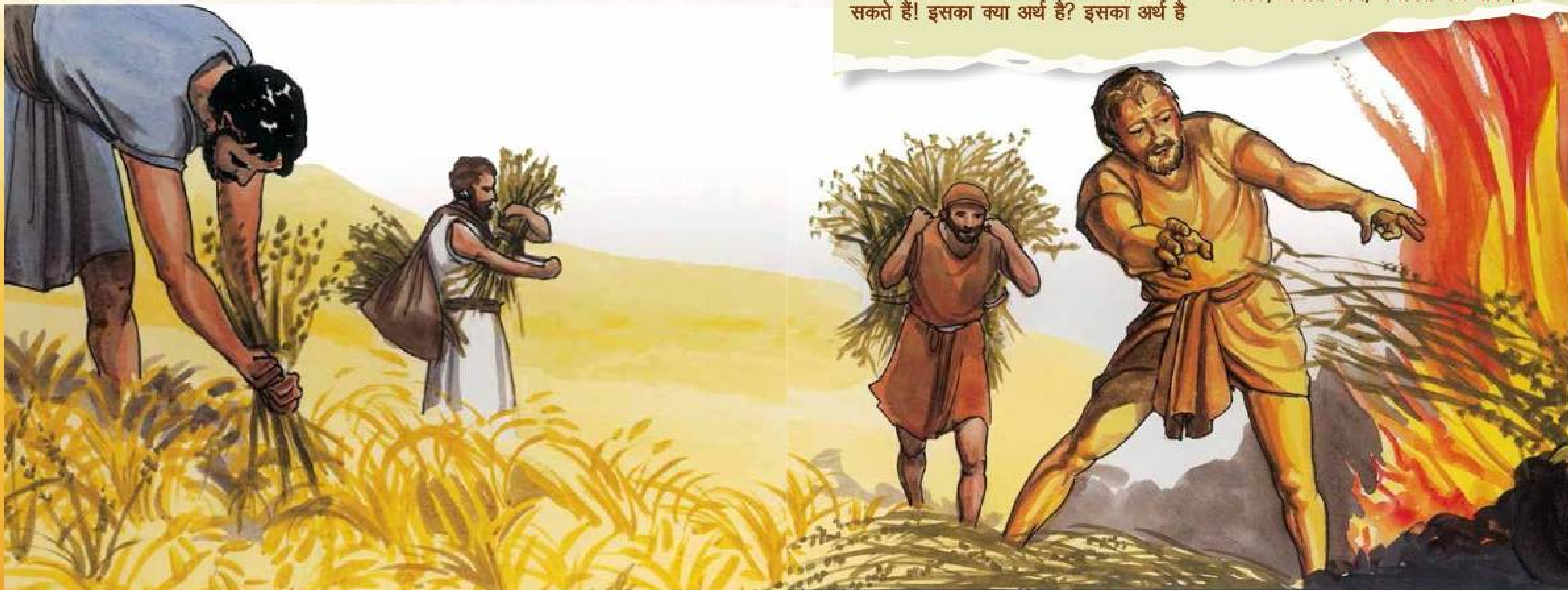

मेरी कहानी

ईश्वर ही मेरी स्तुति है!

- ट्रीसा मैरी शाइन » 13 वर्ष

प्रिय डायरी,

आज का दिन बहुत कठिन था। मैं सुबह बहुत बीमार महसूस करते हुए उठी। मेरा सिर दर्द कर रहा था, शरीर बहुत कमजोर लग रहा था, और मेरा मन बस सोते रहने का था। माँ कमरे में आईं, मेरा तापमान देखा और मुझे आराम करने को कहा। इससे मुझे उदासी हुई, जैसे दुनिया आगे बढ़ रही है और मैं बिस्तर पर ही अटकी हुई हूँ। मैंने हिम्मत रखने की कोशिश की, लेकिन आँसू रुक नहीं पाए। मैं खुद को अकेला और डरा हुआ महसूस कर रही थी, और मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं कब ठीक होऊँगी।

दोपहर में पापा मेरे कमरे में आए और मेरे पास बैठ गए। उन्होंने जल्दी नहीं की और न ही शुरुआत में कुछ ज़्यादा कहा। वे बस मेरे साथ बैठे रहे, और इससे मुझे बहुत सहारा मिला। फिर उन्होंने अपनी बाइबिल खोली और एक वचन पढ़कर सुनाया। उन्होंने कहा कि यह एक प्रार्थना है जिसे हम साथ में कह सकते हैं।

"प्रभु मुझे स्वस्थ कर, तभी मैं स्वस्थ होऊँगा। मेरा उद्धार कर, तभी मेरा उद्धार होगा; क्योंकि मैं तेरी ही स्तुति करता हूँ।" (यिर्मयाह 17:14)

जब उन्होंने यह पढ़ा, तो मेरे अंदर कुछ बदल गया। मैंने अपनी आँखें बंद की और वही शब्द ईश्वर से धीरे-धीरे दोहराए। मुझे एहसास हुआ कि भले ही मैं कमजोर हूँ, ईश्वर शक्तिशाली है। भले ही मैं बीमार हूँ, वही मुझे चंगा करने वाला है। पापा ने मुझे याद दिलाया कि मदद के लिए ईश्वर से प्रार्थना करना और उस पर भरोसा करना ठीक है, चाहे दर्द ही क्यों न हो।

क्या आपके पास कोई विश्वास का अनुभव है जो आप इस पृष्ठ के लिए भेजना चाहते हैं ? उसे अपने पूरे नाम, उम्र और डाक पते के साथ kairosbuds@jykairosmedia.org पर भेजें।

बाइबिल सुलेख

"प्रभु मुझे स्वस्थ कर, तभी मैं स्वस्थ होऊँगा। मेरा उद्धार कर, तभी मेरा उद्धार होगा; क्योंकि मैं तेरी ही स्तुति करता हूँ।"

(यिर्मयाह 17:14)

प्रभु मुझे स्वस्थ कर, तभी मैं स्वस्थ होऊँगा। मेरा उद्धार कर, तभी मेरा उद्धार होगा; क्योंकि मैं तेरी ही स्तुति करता हूँ।

प्रभु मुझे स्वस्थ कर, तभी मैं स्वस्थ होऊँगा। मेरा उद्धार कर, तभी मेरा उद्धार होगा; क्योंकि मैं तेरी ही स्तुति करता हूँ।

प्रभु मुझे स्वस्थ कर, तभी मैं स्वस्थ होऊँगा। मेरा उद्धार कर, तभी मेरा उद्धार होगा; क्योंकि मैं तेरी ही स्तुति करता हूँ।

प्रभु मुझे स्वस्थ कर, तभी मैं स्वस्थ होऊँगा। मेरा उद्धार कर, तभी मेरा उद्धार होगा; क्योंकि मैं तेरी ही स्तुति करता हूँ।

प्रभु मुझे स्वस्थ कर, तभी मैं स्वस्थ होऊँगा। मेरा उद्धार कर, तभी मेरा उद्धार होगा; क्योंकि मैं तेरी ही स्तुति करता हूँ।

प्रभु मुझे स्वस्थ कर, तभी मैं स्वस्थ होऊँगा। मेरा उद्धार कर, तभी मेरा उद्धार होगा; क्योंकि मैं तेरी ही स्तुति करता हूँ।

प्रभु मुझे स्वस्थ कर, तभी मैं स्वस्थ होऊँगा। मेरा उद्धार कर, तभी मेरा उद्धार होगा; क्योंकि मैं तेरी ही स्तुति करता हूँ।

प्रभु मुझे स्वस्थ कर, तभी मैं स्वस्थ होऊँगा। मेरा उद्धार कर, तभी मेरा उद्धार होगा; क्योंकि मैं तेरी ही स्तुति करता हूँ।

प्रभु मुझे स्वस्थ कर, तभी मैं स्वस्थ होऊँगा। मेरा उद्धार कर, तभी मेरा उद्धार होगा; क्योंकि मैं तेरी ही स्तुति करता हूँ।

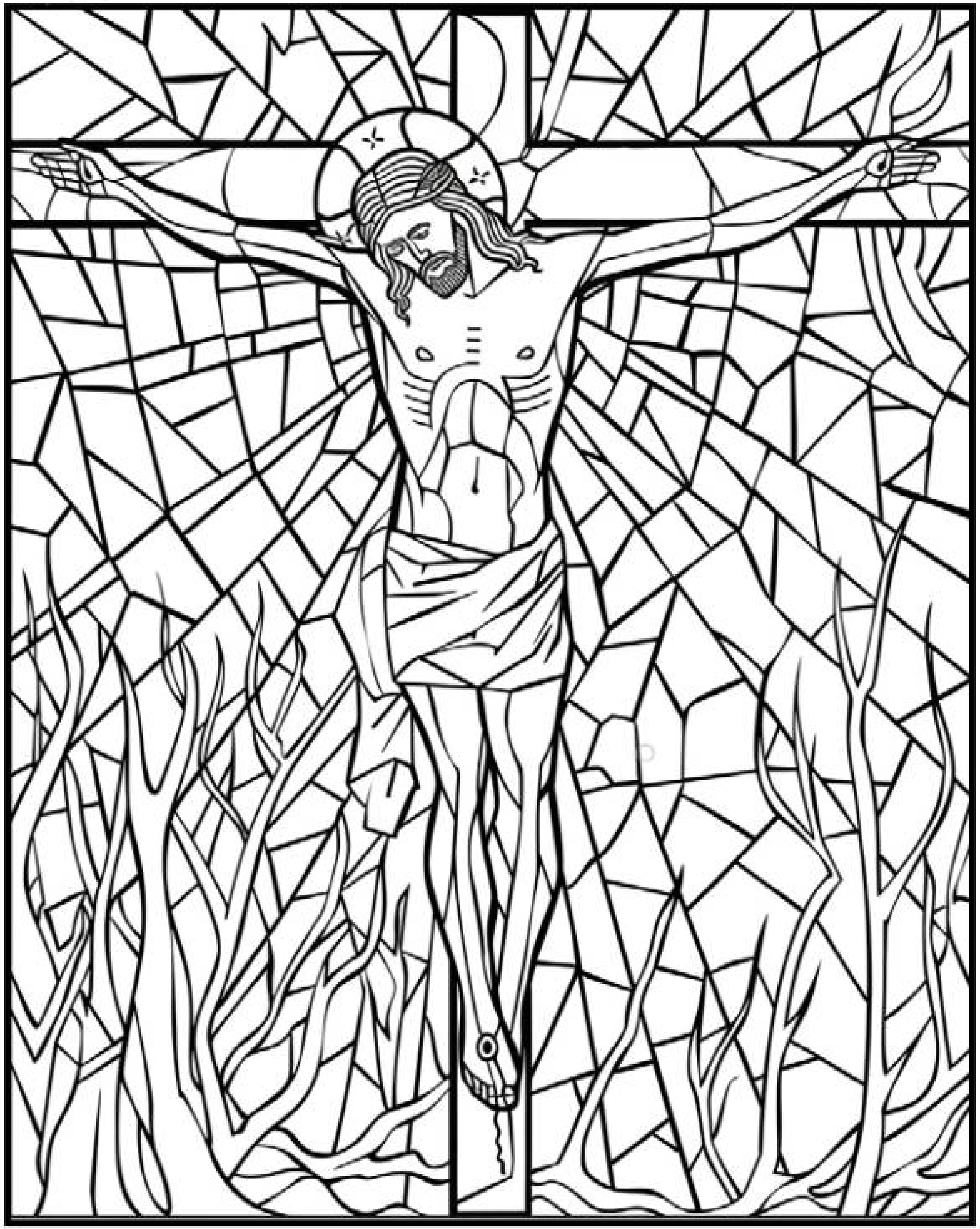

संत ऑस्कर रोमेरो

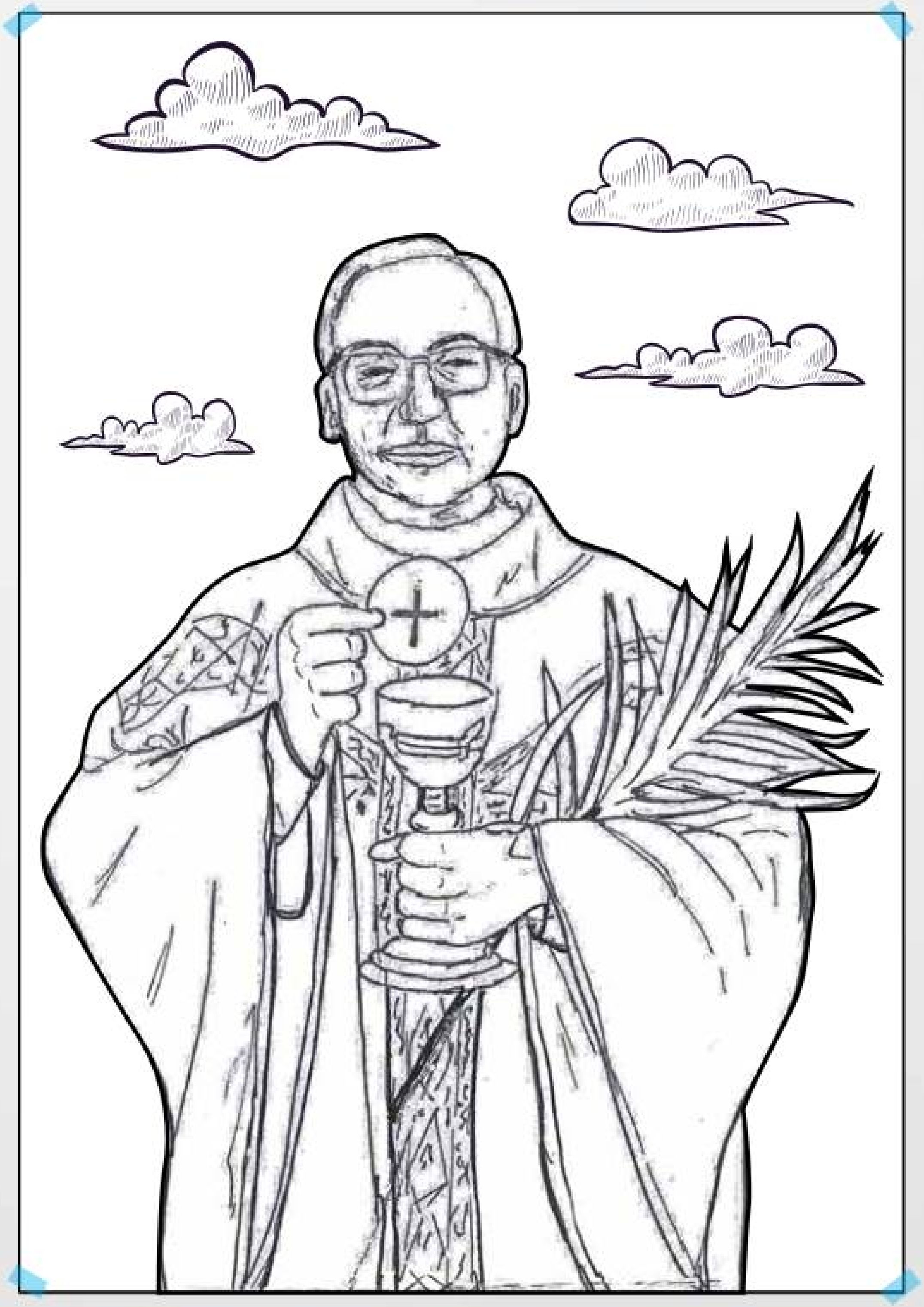

जीवन का वचन

सीखें और रंग भरें

कटनी के समय में लुनने वालों से कहूँगा - पहले जंगली बीज के पौधे एकत्र कर लो और जलाने के लिए इनके गट्ठे बाँधो। तब गेहूँ मेरे बखार में जमा करो।

- मत्ती 13:30

DIY

3D बाइबिल पुस्तक

मोड़िए, चिपकाइए और अपनी खुद की 3D बाइबल पुस्तक बनाइए।
Kairos Buds के आने वाले अंकों से अपना संग्रह भी तैयार कीजिए!

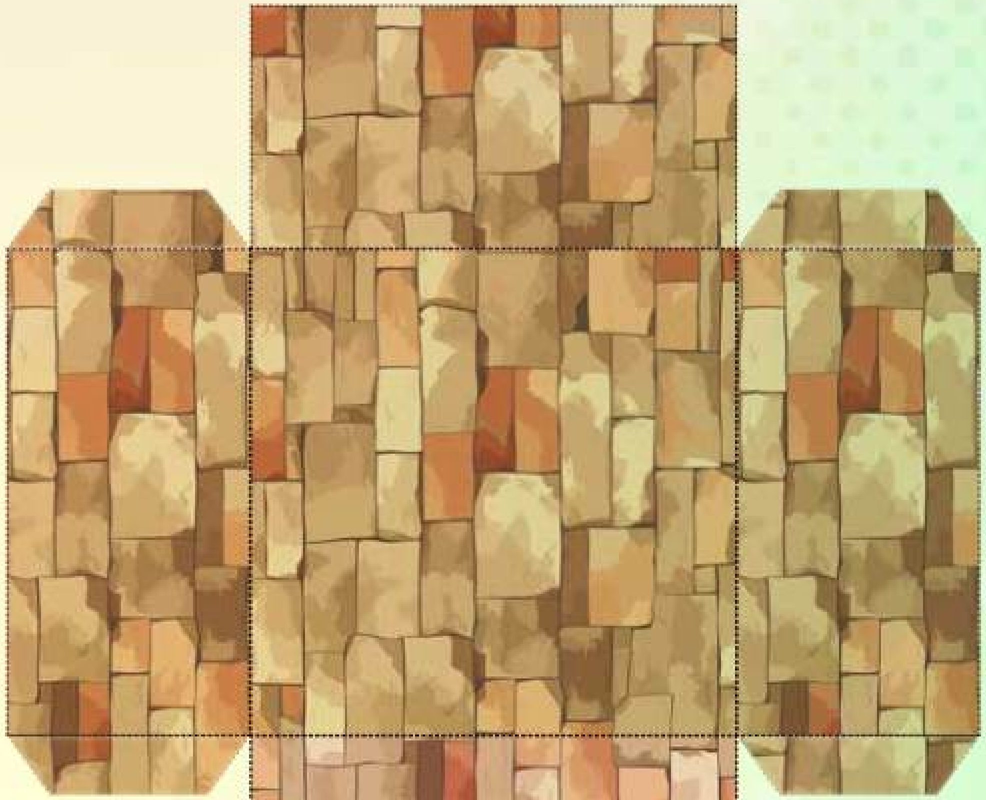

नन्हे उस्ताद

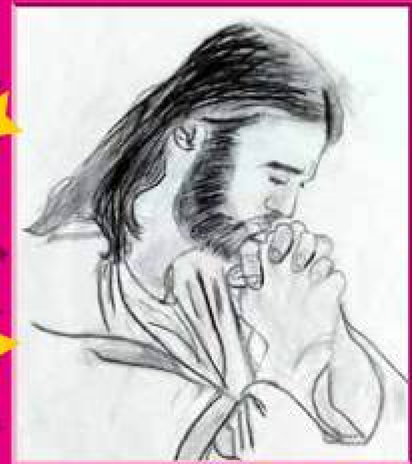

जैस लुईस वर्गीज » 14 वर्ष
» अबू धाबी, यूएई

नन्हे उस्ताद

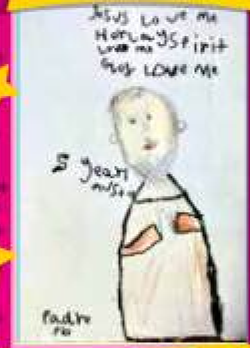

ऑस्टिन इम्मानुएल जीनू » 5 वर्ष
» रेनहैम, यूके

अन्नाई मरिया » 10 वर्ष
» पुरनाट्टुकरा , भारत

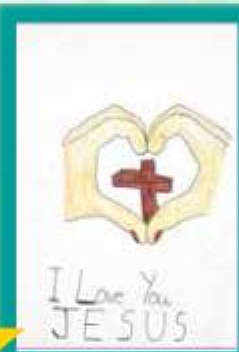

फॉस्टिना एल्सा मैथ्यू » 8 वर्ष
» टेक्सस , यूएसए

नन्हे उस्ताद

एमोस जोजो वर्गीस » 8 वर्ष
» नीदरलैंड

थेरेसा मारिया एंटो » 5 वर्ष
» कंजानी, भारत

इम्मानुएल जोसेफ जोमोन » 7 वर्ष
» वायकोम, भारत

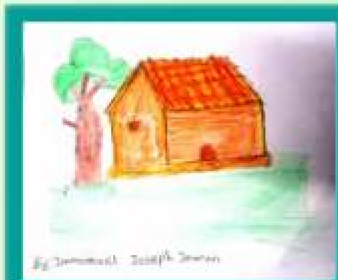

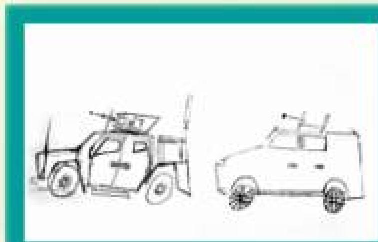

नोएल गिल्स » 10 वर्ष
» ऑक्सफोर्ड, यूके

यदि आप इस पत्रिका के लिए कोई चित्र या लेख भेजना चाहते हैं तो उसे अपने पूरे नाम, उम्र और डाक पते के साथ kairosbuds@jykairosmedia.org पर भेजें।

संत पैट्रिक का ब्रेस्टप्लेट और शैम्रॉक क्राफ्ट

- रोज मैरी टॉम @potterandhisclay

आवश्यक सामग्री

- दो A4 आकार के कागज (1 सफेद, 1 हरा)
- हरा स्केच पेन
- पेंसिल
- कैंची
- गोंद
- प्लास्टिक / कागज / कपड़े का बैग (ब्रेस्टप्लेट के लिए)

विधि

अ) ब्रेस्टप्लेट बनाना

1) प्लास्टिक बैग लें और उसका निचला हिस्सा क्षैतिज रूप से काट दें। "ध्यान रखें कि बैग इतना बड़ा हो कि बच्चा उसे पहन सके।"
2) सफेद कागज को प्लास्टिक बैग पर चिपकाएँ। सूखने के लिए अलग रख दें।

ठ) शैम्रॉक बनाना (तीन पत्ती वाला तिपतिया घास)

1) हरे कागज को पहले लंबाई में मोड़ें, फिर चौड़ाई में मोड़ें।
2) पेंसिल की सहायता से मोड़े हुए कागज पर शैम्रॉक का आधा आकार बनाएँ (चित्र के अनुसार)।
3) उसे काट लें।
4) अब आपके पास दो शैम्रॉक होंगे।
5) पहले शैम्रॉक की प्रत्येक पत्ती पर लिखें:

पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा

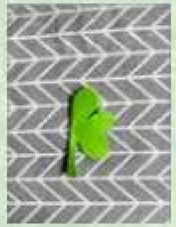

सेंट पैट्रिक ने 5वीं शताब्दी में आयरलैंड के मूर्तिपूजकों को पवित्र त्रित्व समझाने के लिए शैम्रॉक का उपयोग किया था।

अंतिम चरण

1) ब्रेस्टप्लेट के सफेद कागज पर सेंट पैट्रिक की ब्रेस्टप्लेट प्रार्थना लिखें (या प्रार्थना को प्रिंट करके चिपका सकते हैं)। ऊपर बाएँ और नीचे दाएँ कोनों में थोड़ी जगह खाली छोड़ें।
2) जिस शैम्रॉक पर लिखा है, उसे ऊपर बाएँ कोने में चिपकाएँ।
3) सादा शैम्रॉक नीचे दाएँ कोने में चिपकाएँ।

आपका सेंट पैट्रिक का ब्रेस्टप्लेट अब तैयार है!

17 मार्च को संत पैट्रिक का पर्व मनाएँ।
आप इसे पहन सकते हैं, प्रार्थना का पाठ कर सकते हैं,
और इसकी पंक्तियों को प्रतिदिन छोटी-छोटी प्रार्थनाओं (ejaculatory prayers) के रूप में उपयोग कर सकते हैं, ताकि हमें याद रहे कि मसीह हमारी ढाल हैं।

पूर्ण बनना, परिपूर्ण नहीं!

- डॉ. जोसेफ सेबास्टियन

येसु सुसमाचार में एक अजीब–सी कहानी सुनाते हैं। एक किसान अपने खेत में अच्छा बीज बोता है। लेकिन कुछ समय बाद वह देखता है कि गेहूँ के साथ–साथ खेत में जंगली घास (खरपतवार) भी उग आई है। जब मजदूर उससे पूछते हैं कि क्या वे उन खरपतवारों को उखाड़ दें, तो किसान एक अनपेक्षित (अनएक्सपेक्टेड) उत्तर देता है: नहीं। *यदि तुम खरपतवार उखाड़ोगे, तो उनके साथ गेहूँ भी उखड़ सकता है। दोनों को साथ–साथ बढ़ने दो* (मत्ती 13:29–30)।

कोई किसान खरपतवार को बढ़ने क्यों देगा?

क्योंकि किसान एक महत्वपूर्ण बात जानता है: जो कुछ भी बुरा दिखाई देता है, उसे तुरंत उखाड़ देना जरूरी नहीं होता। कभी–कभी सब कुछ एक साथ ठीक करने की कोशिश, भलाई से ज्यादा नुकसान पहुँचा देती है।

"हमारे भीतर के गेहूँ और खरपतवार"

यह दृष्टांत केवल दुनिया के बारे में नहीं है, यह हमारे बारे में है। हम में से हर एक के भीतर **गेहूँ** है– हमारी योग्यताएँ, प्रतिभाएँ, बुलाहट, अच्छे इरादे और वे फल जिन्हें ईश्वर हमारे भीतर उगाना चाहते हैं। और हम में से हर एक के भीतर **खरपतवार** भी हैं– कमजोरियाँ, सीमाएँ, वे आदतें जो हमें पसंद नहीं, हमारे अतीत के घाव, और वे संघर्ष जिन्हें हमने चुना नहीं। मनुष्य होना मतलब– इन दोनों को अपने भीतर लेकर चलना। खतरा यह है कि कभी–कभी हम अपने खरपतवारों पर ही इतना ध्यान देने लगते हैं कि अपने गेहूँ को ही भूल जाते हैं। जो गलत है उसे सुधारने में हम अपनी सारी शक्ति लगा देते हैं, और जो ईश्वर हमारे भीतर उगाना चाहते हैं, उसे नजरअंदाज कर देते हैं।

"पूर्ण व्यक्ति, न कि टूटी हुई परियोजनाएँ"

ईश्वर हमें टूटी हुई परियोजनाओं की तरह नहीं देखते जिन्हें लगातार ठीक करते रहने की जरूरत हो। वे हमें **व्यक्तियों** के रूप में देखते हैं– पूर्ण, प्रेम किए गए और बुलाए गए।

हाँ, हमारे भीतर कुछ चीजें ऐसी हैं जिन्हें सुधार की आवश्यकता है– विशेष रूप से पाप। पाप को पहचाना जाना चाहिए, उसका विरोध किया जाना चाहिए, उसे स्वीकार करना चाहिए और उससे चंगाई पानी चाहिए। लेकिन जो कुछ हमें अपनी कमी जैसा लगता है, वह हर बार पाप नहीं होता।

कुछ चीजें केवल हमारी प्रकृति का हिस्सा होती हैं:

- **हमारा स्वभाव**
- **हमारी संवेदनशीलता**
- **हमारा धीमापन या तीव्रता**
- **हमारे अतीत के घाव**
- **हमारी सीमाएँ**

इन पहलुओं को जबरदस्ती "उखाड़ फेंकने" की कोशिश, उनके पास उग रहे अच्छे बीज को भी नुकसान पहुँचा सकती है। इसीलिए किसान प्रतीक्षा करता है।

"मेरी कृपा तुम्हारे लिए पर्याप्त है"

संत पौलुस ने ईश्वर से अपनी कमजोरी दूर करने की विनती की। ईश्वर ने ऐसा नहीं किया। इसके बजाय ईश्वर ने कहा *"मेरी कृपा तुम्हारे लिए पर्याप्त है, क्योंकि हमारी दुर्बलता में मेरा सामर्थ्य पूर्ण रूप से प्रकट होता है।* (2 कुरिन्थियों 12:9)

कभी–कभी ईश्वर खरपतवार को इसलिए नहीं हटाते क्योंकि वे उसे स्वीकार करते हैं, बल्कि इसलिए कि वे जानते हैं– गेहूँ को बढ़ने के लिए समय, धैर्य और कृपा की आवश्यकता होती है। कृपा का अर्थ पाप को नजरअंदाज करना नहीं है। कृपा का अर्थ है– खुद से घृणा किए बिना बढ़ना सीखना।

"सम्पूर्ण रूप से एक साथ बढ़ना"

मसीही जीवन निर्दोष बनने का प्रयास नहीं है, बल्कि **फलदायी** बनने की यात्रा है।

हमें बुलाया गया है कि हम:

- **अपनी प्रतिभाओं को सँवारें**
- **अपनी बुलाहट का उत्तर दें**
- **जो चंगाई माँगता है, उस पर काम करें**
- **जिसे होना है, उसे स्वीकार करें**
- **ईश्वर के समय पर भरोसा रखें**

ईश्वर एक धैर्यवान किसान हैं। वे जानते हैं कि उन्होंने क्या बोया है। वे जानते हैं– कब छाँटना है, कब सुधार करना है, और कब प्रतीक्षा करनी है। इसीलिए फसल की जल्दी मत करो। गेहूँ को बढ़ने दो। कृपा को अपना शांत कार्य करने दो।

ईश्वर के खेत में,परिपूर्ण बनने से ज्यादा महत्वपूर्ण है- पूर्ण बनना।

चिंतन करें:

- **वह गेहूँ (कोई वरदान, बुलाहट या अच्छा फल) कौन-सा है जिसे ईश्वर इस समय मुझसेअधिक सजगता और प्रेम के साथ सँवारने के लिए आमंत्रित कर रहे हैं?**
- **मेरे भीतर वह कौन-सी खरपतवार है जिसे मुझे धैर्य और कृपा के साथ स्वीकार करना है- परिवर्तन को जबरदस्ती लाने के बजाय, ईश्वर के समय पर भरोसा रखते हुए?**
- **मेरे भीतर वह कौन-सी खरपतवार (पाप या हानिकारक आदत/ढर्रा) है जिसे ईश्वर की सहायता से अभी, बिना देर किए, गंभीर कदम और सुधार की आवश्यकता है?**

संत जोसेफ, सबसे विश्वासयोग्य, हमारे लिए प्रार्थना कीजिए!

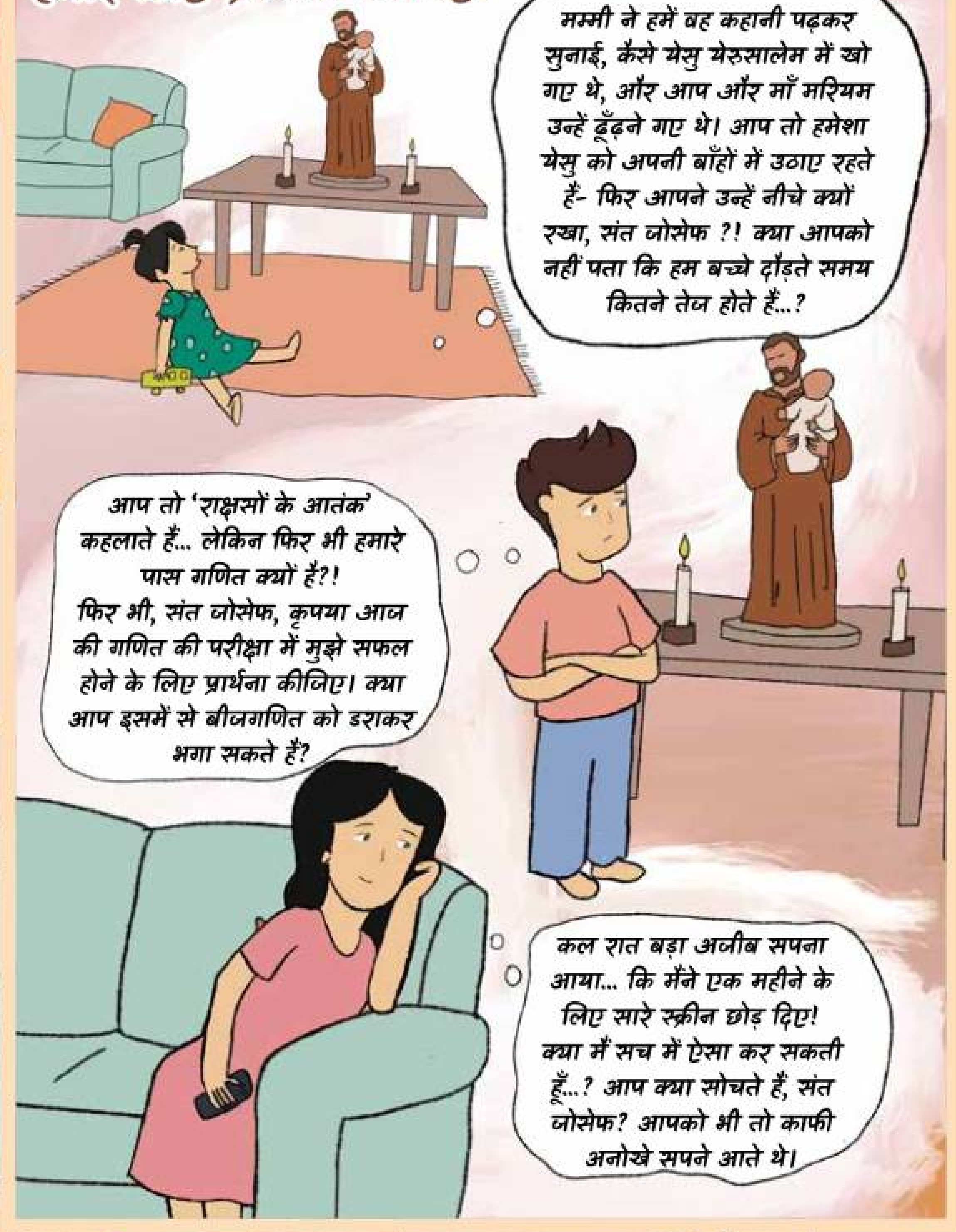

कहानी: तानिया रोज़ जोसुन | चित्रांकन: स्टेफी आंद्राट फारिया

किड कैथोपीडिया

काथलिक विश्वकोश बच्चों के लिए

– मारिया टेरेस सेबास्टियन

बाबेल

इब्रानी: לְבִב לַדְגִמ

अर्थ: भ्रम / अव्यवस्था

स्रोत: उत्पत्ति ग्रंथ, 11:1–9

दुनिया की पहली गगनचुंबी इमारत

बाइबिल के इतिहासकारों के अनुसार, घटनाओं की समय–रेखा को देखते हुए, जब बाबेल का मीनार बनाया गया था, तब संभव है कि नूह जीवित रहे हों। बाबेल से पहले, सारी दुनिया के लोग एक ही भाषा बोलते थे!

नूह के समय की महान बाढ़ के बाद, लोग शिनार देश में आकर बसे। उन्होंने मिलकर एक शहर और एक बहुत ऊँचा मीनार बनाने का निर्णय लिया, जो स्वर्ग तक पहुँच सके। ईश्वर ने उनके अहंकार को देखा और उनकी योजना को रोकने के लिए लोगों को अलग–अलग भाषाएँ दे दीं। इस कारण मीनार का निर्माण बीच में ही रुक गया और लोग पूरी पृथ्वी पर बिखर गए।

व्यक्तिगत सीख

बाबेल की कहानी हमें नम्रता और ईश्वर की आज्ञाकारिता का पाठ सिखाती है।

1 बा __ __ का मीनार, जो बादलों तक उठना चाहता था,
अहंकार के कारण मनुष्यों को अलग कर गया।

2 कलवरी की __ स पर, येसु बादलों तक ऊँचे उठे और
अपनी आज्ञाकारिता और प्रेम के द्वारा संपूर्ण मानवजाति को एकजुट कर दिया।

पहेली

**नीचे दी गई तस्वीरों को ध्यान से देखें जिनमें येसु के अनुयायियों पर पवित्र आत्मा का आगमन दिखाया गया है।
तस्वीरों में आपको जो 10 अंतर दिखाई देते हैं, उन पर गोला लगाएं!**

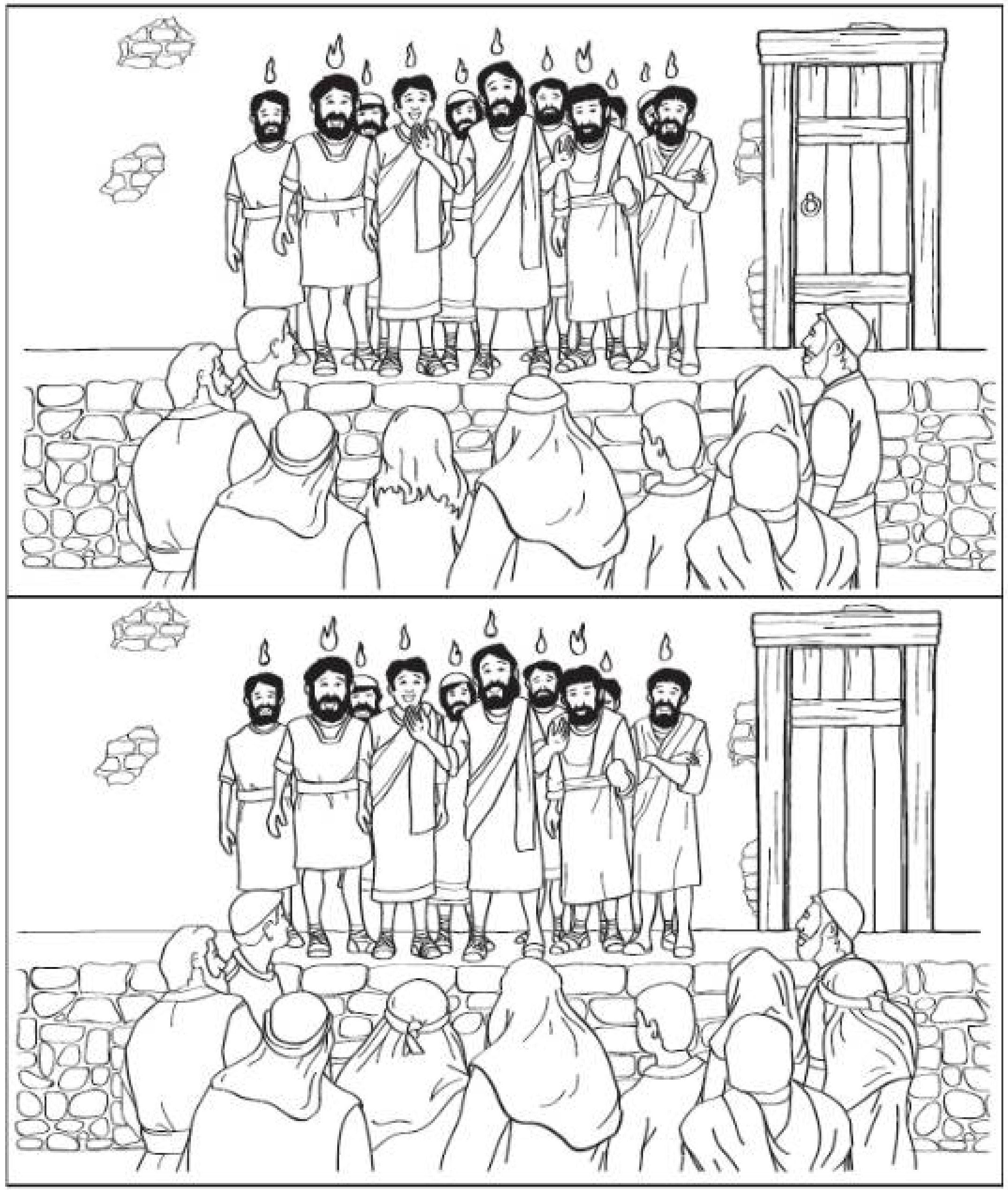

टोनी और टीना

खोया हुआ ख़ज़ाना — भाग 3

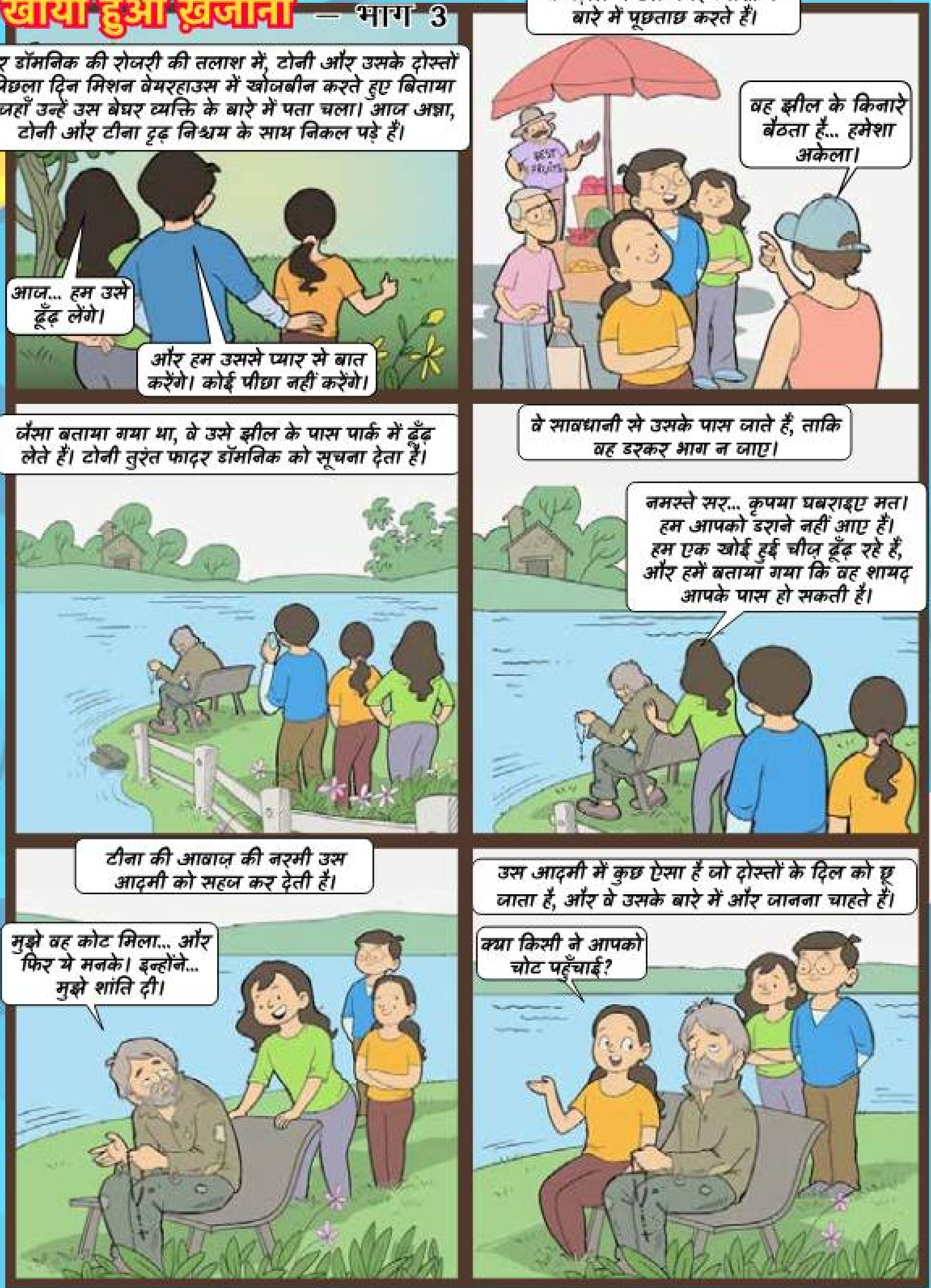

खोजो और रंग भरो

गेहूँ और जंगली घास (कुकरमुत्ता/खरपतवार) के दृष्टांत में, दास आकर स्वामी को बताते हैं कि अच्छी फसल के बीच जंगली घास उग आई है। क्या आप जानते हैं कि स्वामी उन्हें क्या उत्तर देता है ? नीचे दिए गए चित्र में उत्तर खोजिए। (संकेतः मत्ती 13)

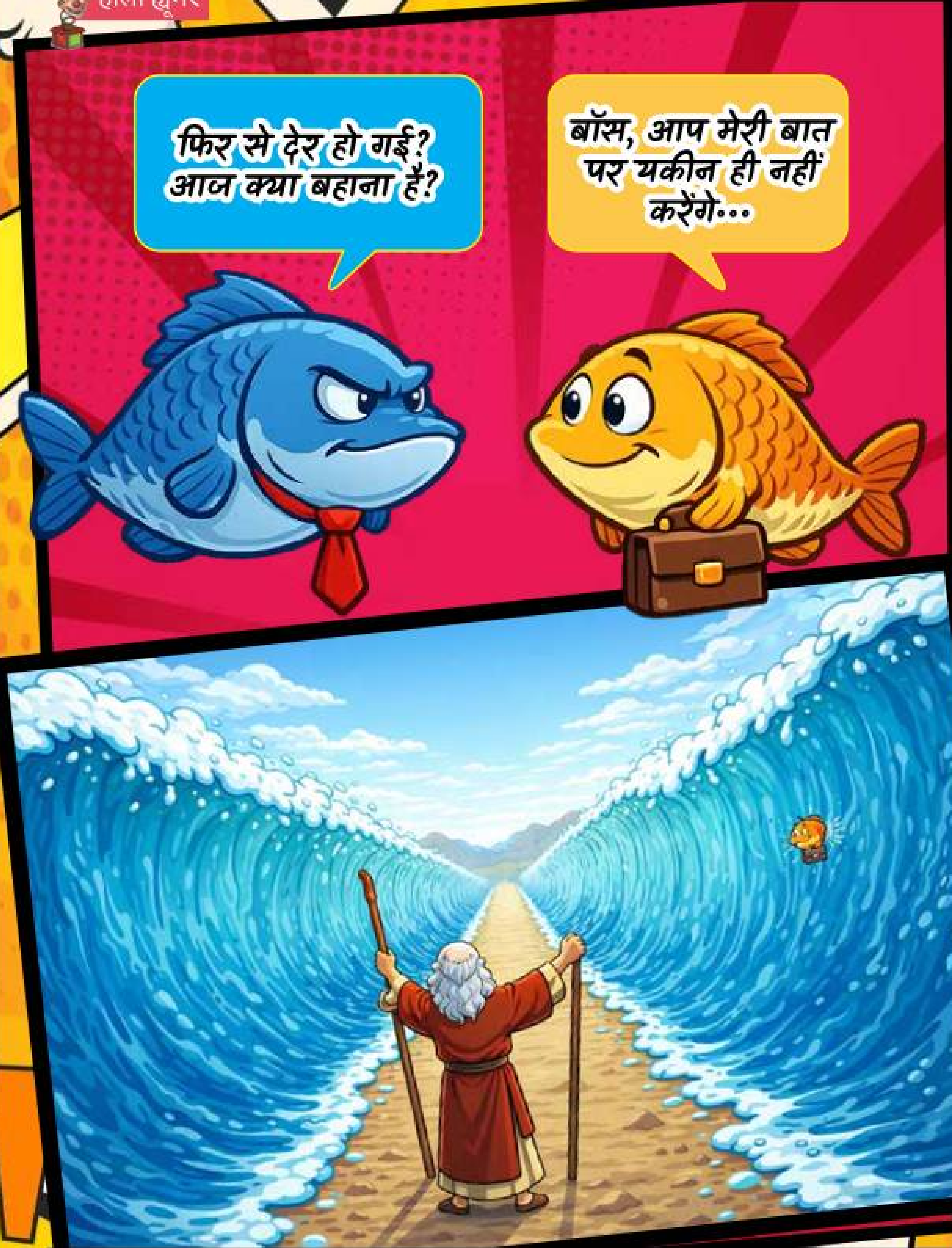

उत्तर:"उन्हें कटनी तक साथ-साथ बढ़ने दो; और कटनी के समय मैं कटनी करने वालों से कहूँगा– पहले जंगली घास इकट्ठा करो और उन्हें जलाने के लिए गट्ठरों में बाँध दो, पर गेहूँ को मेरे खलिहान में इकट्ठा करो।" (मत्ती 13:30)

JESUS YOUTH
INTERNATIONAL
CONFERENCE
2026

GO
TO THE ENDS
OF THE EARTH

From the heart of the Church

20 - 25 OCT
ROME

2026.JESUSYOUTH.ORG

For Private Circulation Only